मैं कैसे जानूँ कि मेरे पाप क्षमा हो गए हैं?

आप पहले ही क्षमा किए जा चुके हैं — इस पर विश्वास करें

मसीही विश्वास की सबसे गहरी सच्चाइयों में से एक यह है: जब आप सच्चे हृदय से पश्चाताप करते हैं — पाप से मुड़कर ईमानदारी से यीशु मसीह पर भरोसा करते हैं — तो परमेश्वर आपको पूरी तरह और तुरंत क्षमा कर देता है। यह क्षमा न अधूरी है, न देर से आती है, और न ही भावनाओं पर निर्भर करती है; यह पूर्ण है और पूरी तरह यीशु के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है।

फिर भी, कई विश्वासियों को पश्चाताप के बाद संघर्ष करना पड़ता है। वे किसी अचानक भावनात्मक परिवर्तन या आध्यात्मिक अनुभव की आशा करते हैं। जब ऐसा नहीं होता, तो वे संदेह करने लगते हैं कि क्या वास्तव में परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया। पिछले पापों की यादें मन में घूमती रहती हैं और संदेह भीतर प्रवेश करता है। यह असामान्य नहीं है — लेकिन यदि इसका समाधान नहीं किया जाए तो यह खतरनाक है।

यह आंतरिक संघर्ष अक्सर शैतान द्वारा उपयोग किया जाता है, जो “हमारे भाइयों का आरोप लगाने वाला” कहलाता है (प्रकाशितवाक्य 12:10). वह

अपराध-बोध और लज्जा का प्रयोग करके विश्वासियों को बंधन में रखता है, ताकि वे सोचें कि उनका पश्चाताप पर्याप्त नहीं था या उनके पाप बहुत बड़े हैं कि क्षमा किए जा सकें।

कई विश्वासी एक चक्र में फँस जाते हैं जिसमें वे बार-बार एक ही पापों के लिए क्षमा माँगते रहते हैं — यह जाने बिना कि जब उन्होंने पहली बार सच्चे दिल से पश्चाताप किया था, तब ही परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया था।

परमेश्वर की क्षमा का स्वभाव

परमेश्वर की क्षमा दो पहलुओं में प्रकट होती है — न्यायक और संबंधात्मक।

न्यायक रूप से: जब हम पश्चाताप करते हैं और मसीह पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर हमें धर्मी ठहराता है — हमारे पाप अब हमारे विरुद्ध नहीं गिने जाते (रोमियों 8:1).

संबंधात्मक रूप से: हम एक पिता के रूप में परमेश्वर के साथ संगति में पुनर्स्थापित हो जाते हैं (1 यूहन्ना 1:9).

बाइबल कहती है — इब्रानियों 8:12 (NIV):

“क्योंकि मैं उनकी दुष्टताओं को क्षमा करूँगा और उनके पापों को फिर कभी स्मरण न करूँगा।”

यह यिर्मयाह 31:34 का उद्धरण है और नए वाचा का हिस्सा है — वह वाचा जो यीशु के लहू से स्थापित हुई (लूका 22:20). जब परमेश्वर कहता है कि वह हमारे पापों को “याद नहीं करेगा,” इसका अर्थ यह नहीं कि उसे भूलने की मनुष्य जैसी कमजोरी है। इसका अर्थ यह है कि वह इच्छा करता है कि उन्हें हमारे विरुद्ध फिर कभी न उठाए।

विश्वास है कुंजी

परमेश्वर की क्षमा को भावनाओं से नहीं, विश्वास से ग्रहण किया जाता है। जब कोई दोषी ठहराने वाला विचार मन में आए — जैसे कि आपने क्षमा न किए जाने योग्य पाप किया है, या आपकी पिछली ज़िंदगी बहुत गंदी थी — तो इन विचारों का विरोध करें। पौलुस लिखता है:

“हर एक विचार को बंदी बनाकर मसीह के आज्ञाकारी बनाओ।”
— 2 कुरिन्थियों 10:5 (NIV)

दृढ़ता से घोषित करें: “मैं यीशु मसीह के लहू से क्षमा किया गया हूँ!” (देखें इफिसियों 1:7).
जब आप इस सत्य को बार-बार स्वीकार करते रहेंगे, तो समय के साथ आप

परमेश्वर की वह शांति अनुभव करेंगे जो सब समझ से परे है (फिलिप्पियों 4:7).

दूसरों को क्षमा करने की शर्त

परमेश्वर की क्षमा में चलने के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त है: हमें दूसरों को क्षमा करना चाहिए। यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा:

“क्योंकि यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा; परंतु यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।”
— मत्ती 6:14–15 (NIV)

अक्षमाशीलता हमारे और परमेश्वर के संबंध में बाधा उत्पन्न करती है। यह आध्यात्मिक रूप से असंगत है कि हम परमेश्वर से दया माँगें जबकि हम स्वयं दूसरों पर दया नहीं करते।
इसलिए, अपना हृदय जाँचें। यदि कोई ऐसा है जिसे आपने अब तक क्षमा नहीं किया, तो आज ही उसे छोड़ दें। यह केवल उसके लिए नहीं — यह आपकी स्वतंत्रता के लिए है।

निष्कर्ष

यदि आपने सच्चे मन से पश्चाताप किया है, तो परमेश्वर ने आपको पहले ही क्षमा कर दिया है।

भावनाओं पर भरोसा न करें — परमेश्वर के वचन पर दृढ़ रहें।

दोषी ठहराने वाले विचारों का विरोध करें — वे परमेश्वर से नहीं
आते।

परमेश्वर की शांति का अनुभव करें — उसकी प्रतिज्ञा पर विश्वास के द्वारा।

दूसरों को क्षमा करें — ताकि आप परमेश्वर की दया का पूरा आनंद ले सकें।

□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□

Share on:
WhatsApp

Print this post